



DR. PURUSHOTTAM DADHEECH (PURU DADHEECH)

Dr. Purushottam Dadheech, popularly known as Dr. Puru Dadheech is an erudite Kathak Dancer and Scholar, who has done pioneering work in bringing Kathak into the mainstream formal education system.

2. Born on 10th August, 1937, Dr. Dadheech, nurtured by great maestros like Pt. Durgaprasad, Pt. Narayan Prasad, Pt. Sunder Prasad and Pt. Shambhu Maharaj, is the holder of world's first Kathak "Sangeetacharya" (then D. Mus) degree, which he got for his thesis, "Kathak Nritya ka Udbhava aur Vikas". He also holds a Ph. D degree on his exhaustive research on Kalidasa -"Sanskrit Prayog Vigyan aur Kalidasiya Rupak". He created the first-of-its-kind structured pedagogy that is the current hallmark of institutionalized Kathak training, which has elevated Kathak among the globally acclaimed classical dance forms.

3. As the Head of Dance Department at Bhatkhande Hindustani Sangeet Mahavidyalaya, Lucknow, Dr. Dadheech developed the library, edited numerous research magazines, and created the first ever Kathak dance course syllabus for many universities and are still used as course curriculum in Indian dance universities. Dr. Dadheech is the first - dancer in history to be awarded the title of Mahamahopadhyaya (Hon DLit) by Akhil Bhartiya Gandharva Maha Vidyalaya Mandal, Mumbai. Through oftentimes unpatronised research, he has unearthed the treasure troves of our bygone Pandits and Ustads, revived old Rachanas and breathed life into ancient classics, for example in Dhrupad Nartan, Nritya Sangeet, Aprachilit taal and Kathak Nritya ke Pracheen Ang.

4. A creator of unique compositions on complicated metrical systems, Dr. Dadheech has inspired many renowned artists to popularize these compositions through their own work. He has authored 15 bestselling books, and written countless research articles presented at numerous all India level Seminars which are published in reputed journals. Till date, 11 dance scholars have obtained their Ph. D degrees under his guidance. Even today at the age of 80, Dr Dadheech is developing path breaking work on Kathak Shastras and reviving the original form of Kathak.

5. Dr. Dadheech is a recipient of several awards and honours including prestigious Sangeet Natak Akademi Award in 2018 for his 'Overall Contribution to the field of Dance and Music'; Academy Award and Copper plate by Sangeet Natak Academy, UP in 1984;, the Dhrupad Bhushan title by Dhrupad Kendra, in 1989; the Shreshtra Kala Acharya by Madhuban, Bhopal in 1990; honoured by then President Dr. Shankar Dayal Sharma at Rashtrapati Bhavan in May 1993; the Kathak Purush Alankaran, Mahakaleshwar in 1998; the Malwa Nritya Shiromani Title by Pandit Durga Prasad Sangeet Kala Academy Indore in 2006; the Shikhar Samman by MP Govt. in 2007 and Life Time Achievement Award in 2019 by Natraj Gopi Krishna Academy, Mumbai.





डॉ. पुरुषोत्तम दाधीच (पुरु दाधीच)

डॉ. पुरु दाधीच के नाम से लोकप्रिय, डॉ. पुरुषोत्तम दाधीच एक प्रकाण्ड कथक नर्तक और विद्वान हैं, जिन्होंने कथक को मुख्यधारा की औपचारिक शिक्षा प्रणाली में शामिल करने में अग्रणी कार्य किया है।

2. 10 अगस्त, 1937 को जन्मे, डॉ. दाधीच, पं. दुर्गाप्रसाद, पं. नारायण प्रसाद, पं. सुंदर प्रसाद और पं. शंभू महाराज जैसे महान उस्तादों की छत्रछाया में, दुनिया के पहले कथक ''संगीताचार्य'' (तब डी.म्यूज) की डिग्री धारक हैं, जो उन्हें उनके शोधपत्र, ''कथक नृत्य का उद्भव और विकास'' के लिए प्रदान की गई। उन्होंने कालिदास पर अपने विशद शोध पर ''संस्कृति प्रयोग विज्ञान और कालिदासिया रूपक'' में पीएच.डी की डिग्री भी हासिल की है। उन्होंने मौलिक रूप से संरचित अध्यापन पद्धति तैयार की, जो वर्तमान में, संस्थागत कथक प्रशिक्षण की पहचान है। इससे कथक को विश्व स्तर पर विख्यात शास्त्रीय नृत्य शैलियों के बीच एक ऊंचा स्थान मिला है।

3. भातखंडे हिंदुस्तानी संगीत महाविद्यालय, लखनऊ में नृत्य विभाग के प्रमुख के रूप में, डॉ. दाधीच ने पुस्तकालय का विकास किया, कई शोध पत्रिकाओं का संपादन किया, और कई विश्वविद्यालयों के लिए पहली बार कथक नृत्य पाठ्यक्रम तैयार किया जिसे अभी भी भारतीय नृत्य विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में प्रयोग किया जाता है । डॉ. दाधीच इतिहास में पहले ऐसे नर्तक हैं जिन्हें अखिल भारतीय गंधर्व महाविद्यालय मंडल, मुंबई द्वारा महामहोपाध्याय (माननीय डी. लिट) की उपाधि से सम्मानित किया गया है। उन्होंने बिना किसी मदद के शोध कार्य किया और हमारे अतीत के पंडितों और उस्तादों के खजाने की खोज की है, पुरानी रचनाओं को पुनर्जीवित किया और प्राचीन कृतियों में नए प्राणों का संचार किया है। ध्रुपद नंदन, नृत्य संगीत, अप्रचलित ताल और कथक नृत्य के प्राचीन अंग इसके उदाहरण हैं।

4. जटिल मीट्रिक प्रणालियों पर अद्वितीय रचनाओं के निर्माता, डॉ. दाधीच ने अपने काम के माध्यम से इन रचनाओं को लोकप्रिय बनाने के लिए कई प्रसिद्ध कलाकारों को प्रेरित किया है। उन्होंने 15 बेस्टसेलिंग किताबें लिखी हैं, और कई अखिल भारतीय स्तर के सेमिनारों में प्रस्तुत अनगिनत शोध लेख लिखे हैं जो प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। अब तक, 11 नृत्य विद्वानों ने उनके मार्गदर्शन में अपनी पीएचडी डिग्री प्राप्त की है। आज भी 80 वर्ष की आयु में, डॉ. दधीच कथक शास्त्रों पर मौलिक कार्य कर रहे हैं और कथक के मूल स्वरूप को पुनर्जीवित कर रहे हैं।

5. डॉ. दाधीच को कई पुरस्कार और सम्मान प्रदान किए गए हैं, जिनमें 2018 में संगीत और नृत्य के क्षेत्र में उनके समग्र योगदान के लिए प्रतिष्ठित संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार; 1984 में संगीत नाटक अकादमी, यूपी द्वारा अकादमी पुरस्कार और ताम्र पत्र; 1989 में ध्रुपद केंद्र द्वारा ध्रुपद भूषण उपाधि; 1990 में मधुबन, भोपाल द्वारा श्रीश्री कला आचार्य; मई 1993 में राष्ट्रपति भवन में तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा द्वारा प्रदत्त सम्मान; 1998 में कथक पुरुष अलंकार, महाकालेश्वर; 2006 में पंडित दुर्गा प्रसाद संगीत कला अकादमी इंदौर द्वारा मालवा नृत्य शिरोमणि उपाधि; 2007 में मध्य प्रदेश सरकार द्वारा शिखर सम्मान और 2019 में नटराज गोपी कृष्णा अकादमी, मुंबई द्वारा लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड शामिल हैं।